



रामदरश मिश्र की कहानियों का कथासंसार

डॉ.सुरेश पी. पटेल (एसोसिएट प्रोफेसर)

हिन्दी विभागाध्यक्ष, श्रीमती ए.पी.पटेल

आर्ट्स एण्ड स्व.श्री एन.पी. पटेल कॉमर्स

कॉलेज नरोडा,अहमदाबाद ।

पद्म श्री पुरस्कार (2025) से सम्मानित रामदरश मिश्र हिन्दी साहित्य के प्रतिष्ठित बहुआयामी रचनाकार हैं। मिश्रजी की कहानियाँ भारतीय समाज, विशेषकर ग्रामीण जीवन और मध्यवर्गीय मानसिकता की गहराई से पड़ताल करती हैं। मिश्रजी हिन्दी साहित्य के प्रमुख कथाकारों में से एक हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज के विविध पहलुओं का सजीव और मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों का कथासंसार व्यापक है, जिसमें ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण, सामाजिक यथार्थ और परिवर्तनशीलता, मध्यवर्गीय जीवन और मानसिक द्वंद्व, स्त्री चेतना और पारिवारिक संबंध, मानवीय करुणा और संवेदना, तथा भाषा और शैलीगत वैविध्यता जैसे महत्वपूर्ण विषय शामिल हैं। रामदरश मिश्र की कहानियाँ न केवल सामाजिक समस्याओं को उजागर करती हैं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं, करुणा और नैतिक मूल्यों को भी गहराई से समझाती हैं। रामदरश मिश्र की कहानियों का कथासंसार को समझने के लिए निम्न मुद्दों को विस्तार से देखते हैं।

● ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण:

रामदरश मिश्र की कहानियों में ग्रामीण जीवन का चित्रण भावनात्मक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर हुआ है। उन्होंने गाँव के लोगों के रोजमर्रा के संघर्ष, परस्पर संबंधों, उत्सवों, संकटों, रीति-रिवाजों तथा विकास और विस्थापन के बीच फंसी उनकी मानसिकता को अत्यंत सूक्ष्मता से रेखांकित किया है। मिश्रजी की प्रमुख कहानियाँ जिनमें ग्रामीण जीवन चित्रित हैं 'एक औरत:एक जिन्दगी', 'बड़ीबात', 'सड़क', 'सर्पदंश' कहानियाँ उदाहरण स्वरूप देख सकते हैं। 'सर्पदंश' कहानी में लेखक ने ग्रामीण जीवन का यथार्थ किस प्रकार चित्रित किया है, एक उदाहरण देखिए ---“इस जमाने में भी डॉक्टर की दवा न कराकर तांत्रिक से विष उतरवाने की क्रिया हास्यास्पद ही नहीं खतरनार भी कही जायेगी। किन्तु मिलों तक इस



इलाके में न कोई अस्पताल है, न डॉक्टर । कोई कहाँ जाए ? कौन है जिम्मेदार जिन्दगीयों के खतरे का”?1.

रामदरश मिश्र के पात्र अधिकतर किसान, मजदूर, या ग्रामीण स्त्रियाँ हैं । वे खेत, फसल, और श्रम से जुड़े हुए हैं। इन पात्रों के माध्यम से लेखक ने ग्रामीण जीवन की मेहनत, जिजीविषा और आत्मसम्मान को प्रकट किया है। उनकी कहानियों की भाषा में गाँव की मिट्टी की महक है। वे क्षेत्रीय शब्दों, लोकोक्तियों, मुहावरों और ग्रामीण बोली का सहज प्रयोग करते हैं, जिससे कथा की विश्वसनीयता और अधिक गहराई तक पहुँचती है । गाँव में रिश्तों की जो गरिमा, आत्मीयता और परस्पर सहयोग होता है, वह उनकी कहानियों में स्पष्ट रूप से उभरता है। माँ-बेटे, पड़ोसी, भाई-बहन, बुजुर्ग और बच्चे — सभी संबंधों में जीवन की गर्माहट दिखाई देती है। रामदरश मिश्र ने केवल परंपरागत गाँव का चित्रण नहीं किया, बल्कि बदलते ग्रामीण समाज, शहरीकरण, आर्थिक विषमता और सामाजिक विघटन के प्रभावों को भी दर्शाया है। आलोचक ओम निश्चल मिश्रजी के बारे में लिखते हैं “गाँव से उनका नाता सघन है इसलिए प्रायः उनकी कहानियाँ भी गाँव के यथार्थ से जुड़ी हैं”।2.

रामदरश मिश्र की कहानियाँ भारतीय ग्रामीण जीवन का जीवंत दस्तावेज़ हैं। उन्होंने गाँव को सिर्फ भूगोल नहीं, बल्कि संवेदना, संस्कृति और संघर्ष की प्रयोगशाला के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके पात्रों में मिट्टी की सौंधी गंध है, संघर्ष की तपिश है और आत्मीय संबंधों की मधुरता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि रामदरश मिश्र की कहानियाँ पढ़ना, केवल साहित्य पढ़ना नहीं, बल्कि गाँव को जीना है, उसकी धड़कनों को महसूस करना है। उन्होंने ग्राम्य जीवन को उसके समस्त यथार्थ, भावनाओं और संघर्षों के साथ अभिव्यक्त कर हिन्दी कहानी को एक नया आयाम प्रदान किया है।

● सामाजिक यथार्थ और परिवर्तनशीलता:

हिन्दी कथा-साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर रामदरश मिश्र उन साहित्यकारों में हैं जिन्होंने कहानी को सामाजिक यथार्थ का दर्पण बना दिया। उनकी कहानियाँ न केवल ग्रामीण और मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण करती हैं, बल्कि समाज की बदलती मानसिकता, सामाजिक ढाँचों के बदलाव और मूल्यों की टूटन को भी बड़ी सूक्ष्मता से उजागर करती हैं। मिश्रजी ने अपने कथानकों में सामाजिक संरचनाओं की वास्तविकता को बेहद संवेदनशीलता और आत्मीयता के साथ प्रस्तुत किया है। वे समाज के उन पहलुओं को सामने लाते हैं, जिन्हें



सामान्यतः नजरअंदाज कर दिया जाता है—जैसे कि आर्थिक विषमता, जातिगत असमानता, स्त्री की स्थिति, रिश्तों की बदलती प्रवृत्तियाँ और आधुनिकता का प्रभाव।

मिश्रजी की कहानियाँ समाज के भीतर के वास्तविक संघर्षों और अंतर्विरोधों को सामने लाती हैं। उनके पात्र आम आदमी हैं—कभी किसान, कभी मजदूर, कभी बेरोजगार युवक या फिर आत्मसम्मान से जूझती स्त्री। ये पात्र समाज की सच्चाई को जीते हुए दिखाई देते हैं, जिससे उनकी कहानियाँ पाठकों को गहराई से छूती हैं। सामाजिक यथार्थ और परिवर्तनशीलता की दृष्टि से 'जमीन', 'सड़क', 'मुर्दा मैदान' कहानियों प्रसिद्ध हैं। 'मुर्दा मैदान' कहानी का एक उदाहरण—“इस गन्दे मैदान में अनेक पेड़ हैं, जो ठूँठ हो चुके हैं। कुछ सरकारी मकान हैं। गिद्ध इन्हीं पेड़ों और मकानों की छतों पर सैकड़ों-हजारों की संख्या में बैठे हुए नये मुर्दे का इन्तजार करते हैं”¹³। उनकी कहानियों में यह स्पष्ट रूप से झलकता है कि आधुनिकता, शिक्षा, शहरीकरण और आर्थिक दबाव समाज को लगातार बदल रहे हैं। लेकिन इन परिवर्तनों के साथ-साथ संवेदना, आत्मीयता और मूल्यों का हास भी हो रहा है। यह परिवर्तन केवल बाहरी नहीं, बल्कि गहराई से मानसिक और भावनात्मक भी है।

रामदरश मिश्र की कहानियाँ सामाजिक यथार्थ और परिवर्तनशीलता की विश्वसनीयता का दस्तावेज हैं। उन्होंने अपने साहित्य में यह दिखाया कि समाज स्थिर नहीं है, वह लगातार बदल रहा है—और इन परिवर्तनों में सबसे ज्यादा असर पड़ता है साधारण लोगों के जीवन पर। उनकी कहानियाँ पाठकों को यह सोचने पर विवश करती हैं कि समाज का भविष्य किस दिशा में जा रहा है, और किस हद तक हम अपनी संवेदना, संबंधों और मूल्यों को बचा पा रहे हैं।

● मध्यवर्गीय जीवन और मानसिक द्वंद्वः

हिन्दी साहित्य में मिश्रजी ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने अपने लेखन में मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं और मानसिक द्वंद्वों को अत्यंत सजीव, सटीक और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियाँ न केवल मध्यवर्ग के बाहरी जीवन को, बल्कि उसके भीतर चल रहे मानसिक संघर्षों, उलझनों और मूल्यों के टकराव को भी उजागर करती हैं। मध्यवर्गीय जीवन वह सामाजिक क्षेत्र है जहाँ चाहत और विवशता, आदर्श और व्यवहार, संस्कार और अवसरवादिता, नैतिकता और यथार्थ — इन सबका टकराव लगातार बना रहता है। रामदरश मिश्र की दृष्टि इसी टकराव को कथा का केंद्र बनाती है। मिश्रजी के पात्र अक्सर आर्थिक रूप



से कमजोर होते हैं, लेकिन उनके भीतर एक बेहतर जीवन की चाह बनी रहती है। यह चाह उन्हें संघर्षशील बनाती है, लेकिन साथ ही भीतर एक द्वंद्व भी उत्पन्न करती है — क्या हम अपने आदर्शों को छोड़ें या समझौता करें? उनकी कहानियों में मध्यवर्गीय पात्रों के सामने यह चुनौती बार-बार आती है कि वे नैतिक मूल्यों को बचाए रखें या व्यावहारिक जीवन को चुनें। यह मानसिक संघर्ष, खासकर सामाजिक दबावों और पारिवारिक ज़िम्मेदारियों के बीच, बहुत मार्मिक बन जाता है। मध्यवर्ग अपने आत्मसम्मान को बहुत महत्व देता है। मिश्रजी ने इस भाव को बड़ी खूबसूरती से दर्शाया है कि कैसे आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद ये पात्र अपनी गरिमा और संवेदनशीलता को बनाए रखना चाहते हैं। उनकी कहानियों में कई बार यह देखा गया है कि मध्यवर्ग का व्यक्ति नवीन विचारों को अपनाना भी चाहता है, लेकिन परंपरा उसे बाँधती है। यह द्वंद्व उसकी सोच, व्यवहार और निर्णयों को प्रभावित करता है। मानसिक द्वंद्व के उदाहरण स्वरूप ‘एक वह’ कहानी को ले सकते हैं। इस कहानी का ताऊ जो बात-बात पर ‘रामचरित मानस’ की चौपाइयाँ दुहराता है, परिवार से परित्यक्त है। वह शहर के किसी कोने में छोटी सी दुकान खोलकर अपना पेट पालता है। अचानक एक दिन मरा हुआ पाया जाता है। उसके आसपास गरीबी हटाओ के पोस्टर चिपके हैं। मिश्रजी ने इस बूढ़े ताऊ का ऐसा चित्रण कहानी में किया है कि देश में चलाए गए गरीबी हटाओ नारे की पोल खुल जाती है। देखिए—“लाश के सिरहाने मानस का गुटका है और एक मुट्ठी में कसी हुई चिट्ठी है। कहीं से उड़ता हुआ आकर एक पोस्टर लाश पर चिपक गया है और फडफडा रहा है। चलते-चलते भीड़ उस पोस्टर को पढ़ लेती है—गरीबी हटाओ....”¹⁴।

रामदरश मिश्र की कहानियाँ मध्यवर्गीय जीवन और मानसिक द्वंद्व के भीतर छिपी गहराइयों, उलझनों और द्वंद्वों का दस्तावेज़ हैं। उन्होंने दिखाया कि यह वर्ग भले ही साधनों में सीमित हो, लेकिन उसकी संवेदनाएँ, संघर्ष और आत्मिक पीड़ा बहुत व्यापक और मानवीय हैं। उनकी कहानियों का यही यथार्थबोध उन्हें आज भी प्रासंगिक और प्रभावशाली बनाता है। मिश्रजी का कथा-संसार एक ऐसे समाज की आत्मकथा है जो चलना तो चाहता है, मगर अपने आदर्शों और मूल्यों की छाया से बाहर नहीं निकल पाता।

● स्त्री चेतना और पारिवारिक संबंध:

रामदरश मिश्र की कहानियाँ भारतीय समाज के स्त्री जीवन और पारिवारिक संबंधों को गहराई से समझने और प्रस्तुत करने का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। उन्होंने अपने साहित्य में न



केवल स्त्रियों की मनोवैज्ञानिक जटिलताओं, सामाजिक सीमाओं और संघर्षों को उकेरा हैं, बल्कि पारिवारिक ढांचे में उनके स्थान और उनके बीच के संबंधों की भी संवेदनशील अभिव्यक्ति की है। उनकी कहानियों में स्त्री पात्र अक्सर परंपरागत और आधुनिक सोच के बीच फसे हुई दिखते हैं। वे अपनी पहचान, सम्मान और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करती हैं, लेकिन परिवार और समाज की पाबंदियों के चलते उन्हें अनेक मानसिक और सामाजिक द्वंद्व झेलने पड़ते हैं।

मिश्रजी की कहानियाँ स्त्री चेतना को सशक्त, संवेदनशील और संघर्षशील रूप में प्रस्तुत करती हैं। उनकी स्त्रियाँ केवल पीड़ित या पराधीन पात्र नहीं, बल्कि स्वयं अपने जीवन की जद्दोजहद लड़ने वाली भी हैं। उदाहरण के लिए ‘बड़ी बात’ कहानी में एक महिला की सामाजिक मर्यादा और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच की टकराहट को दर्शाया गया है। वह अपने अस्तित्व और सम्मान की लड़ाई लड़ती है, जो स्त्री चेतना की महत्वपूर्ण झलक है। ‘एक भटकी हुई मुलाकात’ कहानी स्त्री की चेतना और पारिवारिक संबंधों की पड़ताल करती है। एक स्त्री की व्यथा क्या हो सकती है? कहानी के पात्र अंजना के शब्दों में ही देखिए—“यह पुरुष का कानून है, यह स्वतंत्र देश का कानून है कि बच्चा पैदा करे माँ और अधिकारी हो जाये बाप”¹⁵।

मिश्रजी ने पारिवारिक संबंधों को यथार्थ और विस्तार से चित्रित किया है। परिवार उनकी कहानियों में एक ऐसा स्थान है जहाँ प्रेम, कर्तव्य, अपेक्षाएँ और कभी-कभी संघर्ष एक साथ चलते हैं। स्त्रियाँ परिवार के केंद्र में होती हैं, लेकिन वे अक्सर अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के दायरे में सीमित महसूस करती हैं। उनकी कहानियाँ यह भी दिखाती हैं कि किस प्रकार पारिवारिक दबाव स्त्री की व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर प्रभाव डालता है और उसे कई बार आत्म-संदेह और मानसिक द्वंद्व से गुजरना पड़ता है।

उनकी कहानियाँ स्त्रियों के संघर्ष, दर्द, प्रेम और जिजीविषा को इतनी सहजता से उजागर करती हैं कि वे सामाजिक और पारिवारिक जीवन के द्वंद्वों को समझने का सशक्त माध्यम बन जाती हैं। इस प्रकार मिश्रजी की रचनाएँ स्त्री और परिवार के मध्य चल रहे मनोवैज्ञानिक और सामाजिक टकरावों को स्पष्ट रूप से रेखांकित करती हैं।

● मानवीय करुणा और संवेदना:



रामदरश मिश्र ने अपनी कहानियों में मानवीय करुणा और संवेदना को केंद्र बिंदु बनाकर समाज के विभिन्न पहलुओं को बड़ी संवेदनशीलता से उभारा है। उनकी कहानियाँ केवल घटनाओं का वर्णन नहीं हैं, बल्कि वे मानवीय भावनाओं के सूक्ष्म और गहन पहलुओं को प्रकट करती हैं, जो पाठक के हृदय को छू जाती हैं। उनके पात्र विभिन्न समस्याओं, पीड़ाओं और असफलताओं के बावजूद एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति और सहायता का भाव रखते हैं। उनकी कहानियों में करुणा केवल एक भाव नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने वाली शक्ति के रूप में उभरती है। उदाहरण स्वरूप जब कोई पात्र किसी संकट में होता है, तो दूसरे पात्र उसकी सहायता करते हैं, चाहे वह आर्थिक रूप से कमजोर हो या सामाजिक रूप से पिछड़ा।

रामदरश मिश्र ने अपने कथा संसार में संवेदना को इतना जीवंत रूप दिया है कि पाठक आसानी से पात्रों के दुःख-दर्द, उनके संघर्ष और उनकी आशाओं को महसूस कर पाता है। संवेदना उनके कथानकों में अक्सर ऐसे सामाजिक मुद्दों के संदर्भ में दिखती है जहाँ गरीब, महिला, वृद्ध या किसी अन्य कमजोर वर्ग को न्याय, सम्मान और प्रेम की आवश्यकता होती है। इस दृष्टि से ‘माँ, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो’, ‘एक औरत: एक जिन्दगी’, ‘वसंत का एक दिन’, ‘रहमत मियाँ’ कहानियों को देख सकते हैं। ‘माँ, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो’ में मानवीय करुणा और संवेदना का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया गया है। यह कहानी एक बूढ़ी माँ के अकेलेपन, उसकी भावनात्मक जरूरतों और बेटे की व्यस्त दिनचर्या के बीच उपजे सन्नाटे को केंद्र में रखती है। देखिए—“तुम्हारी माँ तुम्हें देखने के लिए तड़पती रह गई। उनकी आँखों में अन्तिम दम तक जैसे एक ही प्यास थी—तुम्हें देखने की। तुम समय से न आ सके”¹⁶।

मिश्रजी की कहानियाँ मानवीय करुणा और संवेदना की जीवंत मिसाल हैं। उन्होंने अपने पात्रों के माध्यम से यह संदेश दिया कि सहानुभूति, दया और प्रेम ही समाज के टूटते तंतु को जोड़ने की सबसे बड़ी शक्ति हैं। उनकी कहानियाँ हमें यह भी सिखाती हैं कि असली मानवता तब प्रकट होती है जब हम दूसरों के दुःख को अपने दिल से महसूस करते हैं और उनकी सहायता के लिए आगे बढ़ते हैं। इस प्रकार मिश्रजी की कहानियाँ न केवल सामाजिक यथार्थ की गंभीरता से पड़ताल करती हैं, बल्कि मानवीय मूल्यों की रक्षा और संवर्धन के लिए भी प्रेरणा देती हैं।

● भाषा और शैलीगत वैविध्यता:



रामदरश मिश्र की कहानियों में न केवल विषयवस्तु की विविधता देखी जाती है, बल्कि उनकी शैलीगत वैविध्यता भी विशेष ध्यान आकर्षित करती है। उनकी कहानियों की भाषा, संवाद, संरचना और प्रस्तुति के विविध रूप साहित्य में एक समृद्धि और गहराई लेकर आते हैं। मिश्रजी की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सरल, स्पष्ट और प्रवाहपूर्ण भाषा है। वे कठिन और जटिल शब्दों के प्रयोग से बचते हुए पाठक को सहजता से कहानी की दुनिया में ले जाते हैं। उनकी भाषा में रोजमर्रा की बोली का प्रभाव होता है, जिससे कहानी का कथानक और पात्र अधिक प्रामाणिक लगते हैं। मिश्रजी की कहानियों में कथानक की रचना में भी विविधता पाई जाती है। कभी कहानी सीधी-साधी और पारंपरिक रूप में होती है, तो कभी उसमें अंतर्विरोध, मानसिक द्वंद्व और मनोवैज्ञानिक गहराई होती है। यह शैलीगत विविधता उनकी कहानियों को पठनीय और आकर्षक बनाती है। कभी-कभी वे संक्षिप्त और प्रभावी कथा शैली अपनाते हैं, जबकि कभी-कभी विस्तृत विवरणों के माध्यम से पात्रों और परिवेश की बारीकियाँ प्रस्तुत करते हैं।

मिश्रजी की कहानियों में शैलीगत वैविध्य उनकी कथा लेखन की एक बड़ी ताकत है। उनकी सरल लेकिन प्रभावशाली भाषा, स्वाभाविक संवाद, विविध कथानक संरचनाएँ और प्रतीकात्मकता उन्हें हिन्दी कथा साहित्य में एक विशिष्ट स्थान प्रदान करती हैं। यह विविधता उनकी कहानियों को समृद्ध बनाती है और पाठकों को विभिन्न दृष्टिकोणों से सोचने पर मजबूर करती है। अतः मिश्रजी की कहानियों का शैलीगत वैविध्य न केवल उनकी साहित्यिक दक्षता का परिचायक है, बल्कि उनकी कहानियों की प्रभावशीलता और दीर्घकालिक प्रासंगिकता का भी मूलाधार है।

रामदरश मिश्र की कहानियों में भाषा और शैलीगत वैविध्य उनकी रचनात्मक विशेषता है। उन्होंने विभिन्न कथानकों, पात्रों और स्थितियों के अनुरूप भाषा और शैली को बदला है, जिससे उनकी कहानियाँ अधिक प्रभावशाली और संवेदनशील बनती हैं। आइए उनकी कहानियाँ — ‘लड़की’, ‘आखिरी चिट्ठी’, ‘खाली घर’, और ‘पिता-पुत्री’ — के उदाहरणों के साथ भाषा और शैलीगत वैविध्यता को समझते हैं। ‘लड़की’ कहानी में लड़की के सोच-विचार, भय और आत्मबल को सरल भाषा में अभिव्यक्त किया गया है— “क्यों ? लड़की हूँ न”¹⁷। ‘आखिरी चिट्ठी’ कहानी पत्र शैली के रूप में लिखी गई है। आत्मस्वीकृति और आत्ममंथन की शैली। देखिए— “उसकी चिट्ठियाँ उसकी जीवन याचना



की परतें खोलती जाती थीं”।8. ‘खालीघर’ कहानी प्रतीकात्मक और मनोवैज्ञानिक है। खाली घर यहाँ केवल भवन नहीं, एकांत और विरक्त जीवन का प्रतीक है। देखिए— “लौट रहा हूँ एक बोझ लेकर, एक खाली घर लेकर....”।9. ‘रहमत मियाँ’ कहानी की शैली संवादों के माध्यम से भावनाओं की अभिव्यक्ति है। देखिए—“अरे, रहमत मियाँ! आप?, नमस्ते, बाबूजी! नमस्ते नमस्ते, आइए रहमत भाई !”।10.

निष्कर्षतः रामदरश मिश्र का कथासंसार समाज की गहराइयों से निकली संवेदनाओं का प्रतिबिंब है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से हिन्दी कथा साहित्य को नई दिशा, गहराई और सामाजिक चेतना दी है। उनकी कहानियाँ सिर्फ घटनाएँ नहीं बल्कि समय और समाज की धड़कन हैं। वेदप्रकाश अभिताभ लिखते हैं— “वे आन्दोलनों की जलवायु से पैदा कहानीकार नहीं हैं, कितने आन्दोलन उनके सामने से गुजरे पर वे उस शोर-शराबे के बीच भी अनुभव, बोध और रूपबन्ध के स्तर पर वैविध्यपूर्ण कहानियाँ लिखते रहे”।11.

इस प्रकार मिश्रजी का कथासंसार केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और मानवीय दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी कहानियाँ आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए हैं और समाज में व्याप्त जटिलताओं को समझने और सुधार की दिशा में प्रेरित करने में सक्षम हैं।

संदर्भ:

1. प्रतिनिधि कहानियाँ, रामदरश मिश्र, पृ. 54
2. प्रतिनिधि कहानियाँ, रामदरश मिश्र, पृ. 9
3. प्रतिनिधि कहानियाँ, रामदरश मिश्र, पृ. 41
4. प्रतिनिधि कहानियाँ, रामदरश मिश्र, पृ. 34
5. प्रतिनिधि कहानियाँ, रामदरश मिश्र, पृ. 117
6. प्रतिनिधि कहानियाँ, रामदरश मिश्र, पृ. 19
7. प्रतिनिधि कहानियाँ, रामदरश मिश्र, पृ. 96
8. प्रतिनिधि कहानियाँ, रामदरश मिश्र, पृ. 96
9. प्रतिनिधि कहानियाँ, रामदरश मिश्र, पृ. 138
10. प्रतिनिधि कहानियाँ, रामदरश मिश्र, पृ. 58
11. प्रतिनिधि कहानियाँ, रामदरश मिश्र, पृ. 14